

---

# Hymn to Nitai or Nityananda

——  
**नित्यानन्दाष्टकम्**

——  
**Document Information**



---

Text title : Nityanandashtakam 1 Hymn to Nitai or Nityananda

File name : nityAnandAShTakam.itx

Category : deities\_misc, gurudev, krishna, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Author : vRindAvanadAsa ThAkUra

Transliterated by : Syama Jivani Devi Dasi

Proofread by : PSA Easwaran

Latest update : February 22, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 22, 2022

*sanskritdocuments.org*

---



नित्यानन्दाष्टकम्



शरच्चन्द्रभ्रान्तिं स्फुरदमलकान्तिं गजगतिं  
हरिप्रेमोन्मत्तं धृतपरमसत्त्वं स्मितमुखम् ।  
सदाघूर्णन्नेत्रं करकलितवेत्रं कलिभिदं  
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ १ ॥

रसानामागारं स्वजनगणसर्वस्वमतुलं  
तदीयैकप्राणप्रमितवसुधाजाह्ववपतिम् ।  
सदाप्रेमोन्मादं परमविदितं मन्दमनसां  
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ २ ॥

शचीसूनुप्रेष्ठं निखिलजगदिष्टं सुखमयं  
कलौ मज्जिज्जिवोद्धरणकरणोद्दामकरुणम् ।  
हरेराख्यानाद्वा भवजलधिगर्वोन्नतिहरं  
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ३ ॥

अये भ्रातर्नृणां कलिकलुषिणां किं नु भविता  
तथा प्रायश्चित्तं रचय यदनायासत इमे ।  
व्रजन्ति त्वामित्थं सह भगवता मन्त्रयति यो  
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ४ ॥

यथेष्टं रे भ्रातः कुरु हरिहरिध्वानमनिशं  
ततो वः संसाराम्बुधितरणदायो मयि लगेत् ।  
इदं बाहुस्फोटैरटति रटयन् यः प्रतिगृहं  
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ५ ॥

बलात् संसाराम्भोनिधिहरणकुम्भोद्भवमहो  
सतां श्रेयःसिन्धून्नतिकुमुदबन्धुं समुदितम् ।  
खलश्रेणीस्फूर्जित्तिमिरहरसूर्यप्रभमहं  
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ६ ॥

नटन्तं गायन्तं हरिमनुवदन्तं पथि पथि  
ब्रजन्तं पश्यन्तं स्वमपि न दयन्तं जनगणम् ।  
प्रकुर्वन्तं सन्तं सकरुणदृगन्तं प्रकलनाद्-  
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ७ ॥

सुबिभ्राणं भ्रातुः करसरसिजं कोमलतरं  
मिथो वक्रालोकोच्छलितपरमानन्दहृदयम् ।  
भ्रमन्तं माधुर्यैरहह मदयन्तं पुरजनान्  
भजे नित्यानन्दं भजनतरुकन्दं निरवधि ॥ ८ ॥

रसानामाधारं रसिकवरसद्वैष्णवधनं  
रसागारं सारं पतितततितारं स्मरणतः ।  
परं नित्यानन्दाष्टकमिदमपूर्वं पठति यः  
तदङ्घ्रिद्वन्द्वाञ्जं स्फुरतु नितरां तस्य हृदये ॥ ९ ॥

इति वृन्दावनदासठाकूरविरचितं नित्यानन्दाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Nityananda He Who embodies eternal bliss

---

*Hymn to Nitai or Nityananda*

pdf was typeset on November 22, 2022

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

